MTTP–001

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

Scanned with CamScanner

अनुवाद परियोजना
(एम.टी.टी.पी.-001)

(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.जी.सी.बी.एच.टी.) को पूरा करने के लिए आपको चार–चार क्रेडिट के चार पाठ्यक्रम करने होंगे। इस स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम का चौथा पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.–001) 'अनुवाद परियोजना' का है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएँगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी पर्याय आपको पता नहीं हैं। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन–कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य–विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएँगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली–भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य–विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/मलयालम) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य–रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन–शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आवश्स्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच–प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बाद फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ–साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

Scanned with CamScanner

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइडिंग कराके प्रस्तुत करें।

- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का उल्लेख होना चाहिए। इस तरह, आपकी 'अनुवाद परियोजना' का आरंभिक पृष्ठ इस प्रकार होगा :

कार्यक्रम का शीर्षक :	बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
पाठ्यक्रम कोड :	एम.टी.टी.पी.–001
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	अनुवाद परियोजना
अध्ययन केंद्र का नाम:	....
नामांकन संख्या :	....
नाम :	....
पता :	....
	....
हस्ताक्षर :	....
तिथि :	....

- अनुवाद परियोजना के साथ एक **प्रमाण–पत्र भी लगाएँ** जिसमें आपके अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित किया गया हो कि आपने यह अनुवाद–कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।

- **अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से अथवा पंजीकृत डाक द्वारा भेजें :**

  कुलसचिव
  विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि

जनवरी 2022 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **31 मई, 2022**
जुलाई 2022 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2022**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यकम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

Scanned with CamScanner

अनुवाद परियोजना

(एम.टी.टी.पी.–001)

कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

10 x 8 = 80

(ক) আইন্‌স্টাইন্‌ এরপরে এসে দেশকালের সমস্যার উদ্যত শিংদুটো ধরলেন আর দার্শনিক-ষাঁড়টি জব্দ, দেশকালের দ্বিধা একই ষাঁড়ের দুটো শিং। দেশ ও কাল তথা জড়বস্তু ও তড়িৎশক্তি। বস্তুপুঞ্জ বেগের আবেগে জ্ব'লে ওঠে আলোকসত্তায়। বেগের উপরেই নির্ভর করে জড়বস্তুর আকার, যতই জোরে চলা ততই ওজনে বৃদ্ধি আর আকারে হ্রাস। আর এই আলোর তরঙ্গ যেন এই বস্তুপিণ্ডের পিঠে চাপ দিয়ে আকাশকে ক'রে দিলে অর্ধচক্র। যামিনী রায়ের ছবিতে যেমন, বিশ্বেও তেমনি সরল রেখা নয়, জ্যাবদ্ধ বক্রটানের চলতি।

তারপরে বর্ণবীক্ষণযন্ত্রের এবং বর্ণবেগমাপের যন্ত্র। স্পন্দমান অণুর আবেগ লেবরেটরিতে যে-মাত্রায় চলে, সেই মাত্রাই আমাদের সূর্যে আর দূরদেশের নক্ষত্র-পুঞ্জেও সেই এই একই মাত্রা, প্রথম যন্ত্রটি তা প্রমাণ করে। বর্ণস্পিডোমিটরে জানা যায় নেব্যুলাদের ধরনধারণ। নেব্যুলা হচ্ছে দু-রকম, এক দীপ্যমান বাষ্পের পিণ্ডসমষ্টি, আরেকটি কোটি নক্ষত্রের স্বাধীন সংঘ। আমাদের কাব্যের চেনা ছায়াপথ প্রথম শ্রেণীর এক নাক্ষত্রিকপুঞ্জ, আর ঐ স্বাধীন সংঘগুলি আরো দূরে। ঐ দ্বৈপায়ন বিশ্বগুলির দূর নক্ষত্র প্রায় সনাক্ত করাই যায় না, তবু চেনা নক্ষত্রের মতোই তাদের আলোকক্ষেপের ভঙ্গীতে বোঝা যায় যে, ওরা কোটি কোটি নক্ষত্র দীপাবলির শোভাযাত্রা। এদের মধ্যে নিকটতম তারার ঝাঁক হচ্ছেন আণ্ড্রোমিডা। এই বিরাট অশ্রুমতী অগ্নিশিখাও পরিমেয় এবং জানা যায় ইনি সেকেণ্ডে বিশ মাইল বেগে মর্ত্যের আমাদের দিকে আসছেন। অভিসার বলা যায়, কারণ তাঁর সহচরীরা দূর থেকে দূরান্তরে চ'লে যাচ্ছেন।

কিন্তু আলোর যাত্রার মাত্রা কি? প্রদীপের দূরত্ব জানা যায় সহজে; কারণ আলোর তেজ কমে দূরত্বের বর্গ অনুসারে। নক্ষত্ররাশির আলোর ধরন দু-রকমে জানা যায়, কোন-কোন ক্ষেত্রে ঘূর্ণায়মান সঙ্গীর ছায়ায় নিয়মিত গ্রহণ লাগে। কোন-কোন নক্ষত্রের বিচ্ছুরণ ছন্দিত স্পন্দনে। সেফাই-তে প্রথমে দৃষ্ট ব'লেই এই শ্রেণীর নাম হয়েছে সেফাইড্, এ-দলে বিখ্যাত আমাদের ধ্রুবতারা এবং এর ছন্দের বৃত্ত চারদিক ঘিরে চলে। সাহিত্যের ধ্রুবতারায় প্রেমাবেগ দেখছি নিছক ধ্রুব নয়, যদিও এই ছন্দোগত ওঠাপড়া আপাতনগণ্য।

ম্যাজেলানি তারকা-মেঘে শ্রীমতী লীভিট্ দেখেন এক ব্যাপার। সেটা হচ্ছে এই কোটি কোটি প্রায় সমদূর পুঞ্জের নক্ষত্রদের স্পন্দনকাল ও সূর্যশক্তির মধ্যে

Scanned with CamScanner

(২৭) স্কটল্যাণ্ড ইয়ার্ডের ইতিহাসের পাতায় যেমন 'দি ব্যাট্‌ল অফ হীথ রো' বিখ্যাত হয়ে আছে তেমনি বিখ্যাত কিম্বা হয়তো তার চাইতেও বেশি বিখ্যাত আর একটি ঘটনার নাম 'দি ব্যাট্‌ল অফ সিডনী স্ট্রীট'। এই দ্বিতীয় ঘটনাটি ঘটেছিল প্রথমটির বেশ কিছুকাল আগে। প্রথমটি ছিল সাধারণ ডাকাতির ঘটনা, আর এই সিডনী স্ট্রীটের ঘটনার সঙ্গে জড়িত ছিল রাজনীতি যার সঙ্গে পরবর্তীকালের একজন বিশ্ব-বিখ্যাত রাজনৈতিক নেতার যোগাযোগ ছিল বলে অনেকের অনুমান।

ডিসেম্বর মাসের মাঝামাঝি। প্রচণ্ড শীতের মধ্যে মহানগরী লণ্ডন ও তার আশেপাশের অঞ্চল ঘুমিয়ে আছে। ভয়ানক কুয়াশায় একহাত দূরের বস্তুও নজরে পড়ে না। জনশূন্য রাস্তায় কেবল গ্যাসলাইটগুলো মাথার ওপর মিটমিটে আলো নিয়ে দাঁড়িয়ে আছে পাহারাদারের মত। ইউনিফর্মের ওপর মোটা গ্রেটকোট চাপিয়ে রাতের প্রহরী কোন একজন কন্‌স্টেবল হয়তো পায়ের নাল লাগানো জুতোর খট-খট শব্দ তুলে মন্থর গতিতে হেঁটে চলেছে ফুটপাথ ধরে। নজর তার রাস্তার দু'ধারের বাড়িগুলোর দিকে।

এমনি সময় হাউণ্ডস্‌ডিচ অঞ্চলের একটি বাড়ির একজন ভদ্রলোকের ঘুম ভেঙ্গে গেল। রাস্তার ওপর দোতলায় একটা ফ্ল্যাটে থাকতেন তিনি। একতলায় ছিল একটা নামী জুয়েলারী শপ্‌—গহনার দোকান। একতলায় কিসের যেন একটা শব্দ হচ্ছিল, আর তাতেই ঘুম ভেঙ্গে গিয়েছিল তাঁর।

ভদ্রলোক খানিকক্ষণ কান পেতে রইলেন। ঠিকই শুনেছেন তিনি। একটানা একটা শব্দ ভেসে আসছে একতলা থেকে। কেউ যেন হাতুড়ির ঘায়ে কোনো কিছু ভাঙতে গিয়ে ঐ একটানা খট্‌-খট্‌ শব্দ করে চলেছে। তবে কি কোন বার্গলার অর্থাৎ চোর ঢুকেছে ঐ গহনার দোকানে? সম্ভবত তাই। এই হাউণ্ডস্‌ডিচ অঞ্চলের সেরা জুয়েলারী শপ্‌ এটা। চোর হয়তো বেশ কয়েক হাজার পাউণ্ডের জিনিষপত্র নিয়ে সরে পড়বে। একটা কিছু ব্যবস্থা এখনই করতে হয়। কিন্তু সে একা আর কি করতে পারে? একমাত্র পারে টেলিফোনে পুলিশকে খবর দিতে। কিন্তু এখন তো তারও উপায় নেই। আজ সকাল থেকেই তার টেলিফোন বিকল হয়ে রয়েছে। তবে এখন উপায়? ডিসেম্বরের এই হাড়কাঁপানো শীতের রাতে সে একা এখন কেমন করে পুলিশকে খবর দেবে?

সহসা কি মনে হতেই ভদ্রলোক স্লিপিং গাউন পরেই নিঃশব্দে নেমে আসেন নীচে। একতলার একটা বন্ধ জানালার পাশে কান খাড়া করে কিছুক্ষণ দাঁড়িয়ে থাকেন। হ্যাঁ ঠিক, ভেতর থেকেই ভেসে আসছে সেই আওয়াজ। তারপর আর সময় নষ্ট না করে সোজা এসে দাঁড়ালেন ফুটপাথের ওপর। মনে আশা, একখানা টহলদারী

Scanned with CamScanner

(গ) চমৎকার ! সকাল বেলাই এক ঝামেলা।

ঠিকরে উঠল লতিকা। বলতে যাচ্ছিল 'আপদ', সামলে নিয়ে বলল, 'ঝামেলা'।

তারপর পরিতোষের কাছে চলে এসে তেমনি ঝঙ্কারের সঙ্গেই বলল, সকাল বেলাই সুখবর শোনো ! তোমাদের নয়নপুর থেকে তোমার প্রাণের বড়দা এসেছেন।

পরিতোষের হাতে সবে এক চুমুক খাওয়া চায়ের কাপ। পরিতোষ সতৃষ্ণ নয়নে জানলার দিকে তাকিয়েছিল কতক্ষণে খবরের কাগজটা এসে পড়ে।

একতলার ঘর, সামনের জানলা দিয়ে কাগজ ফেলে দিয়ে যায়।

বড়দা নয়নপুর থেকে এসেছেন ?

পরিতোষের পেয়ালা থেকে একটু চা চলকে পড়ে গেল।

জ্যাঠতুতো ভাই বড়দা সম্পর্কে পরিতোষের যে একদা কিছুটা দুর্বলতা ছিল সে কথা লতিকার জানা বলেই এভাবে ঠোক্কর দিয়ে কথা বলা।

তা নয়নপুরের কথা উঠলে কার সম্পর্কেই না ঠোক্কর দিয়ে ছাড়া কথা বলে লতিকা ?

সেই যে বিয়ের পর কবে কোন্ কালে নতুন বৌ হিসেবে দেশের বাড়িতে কটা দিনের জন্যে বাস করতে যেতে হয়েছিল, সেই সূত্রেই নাকি তার নয়নপুর সম্পর্কে অনেক অভিজ্ঞতা হয়ে গেছে। আর সে অভিজ্ঞতা যে মধুর নয় তা লতিকার এযাবৎ কালের সমস্ত কথাবার্তার মধ্যেই ধ্বনিত হয়।

কিন্তু এমন কী সেই অভিজ্ঞতা ?

যা সারাজীবন কাল মন বিরূপ করে রাখতে পারে ?

আর কিছুই নয়। মূল কারণ হচ্ছে পরিতোষের সেই তুচ্ছ গণ্ডগ্রামটুকুর প্রতি প্রাণের ভালবাসার খবর। হ্যাঁ, লতিকা যখন ওই গাঁইয়া জায়গাটা সম্পর্কে সমালোচনায় মুখর হয়েছে, তখনই ওই 'খবর'টি টের পেয়েছে। পরিতোষের মুখের রেখায় রেখায় সেই ভালবাসাটির খবর ধরা পড়েছে।

অতএব সতীনের হিংসেতুল্য একটি জ্বালা !

পরিতোষ কি আর তা না বুঝতে পারে ? বুঝতে পেরে পেরেই তো সেই একান্ত গভীর সুন্দর ভালবাসাটুকুকে হৃদয়ের নিভৃত কোটরে কবরিত করে রাখতে রাখতে ক্রমশঃ তাকে ভুলেই গেছে। অর্থাৎ সত্যিই কবরিত হয়ে গেছে।

(ঘ) সিউড়ির এস পি ভাণ্ডারি সাহেব বলে দিয়েছিলেন রামপুরহাটে গিয়ে সোজা পি ডবলু ডি বাংলোতে চলে যাবেন। আমি ট্রাংকলে রামপুরহাটের ওসিকে বলে রেখে দেব। সে সব ব্যবস্থা করে রাখবে। আমার জেলায় যতক্ষণ আছেন ততক্ষণ কোন ভাবনা নেই।

কিন্তু রামপুরহাটে গিয়ে আমার কি মতি হল আমি পি ডবলু ডি বাংলোয় না গিয়ে সোজা রামপুরহাট স্টেশনের রিটায়ারিং রুমে গিয়ে উঠলাম।

আসলে বাসটা আমায় নামিয়ে দিল একেবারে স্টেশনে। এক রিকশাওয়ালাকে জিজ্ঞেস করলাম ঃ পি ডবলু ডি বাংলো কতদূর? সে বলল, তা এক মাইল হবেক। মনে মনে ভাবলাম, আবার এক মাইল ঠেঙিয়ে যাব, এসেই যখন পড়েছি তখন একবার জেনে নেইনা কেন রিটায়ারিং রুমে জায়গা আছে কি-না। কাল ভোর ছ'টায় আপার ইণ্ডিয়া একসপ্রেস ধরে কলতলায় ফিরতে হবে।

সেদিক থেকে রিটায়ারিং রুম অনেক বেশি সুবিধাজনক।

ব্যাগটা হাতে করে ধীরে ধীরে স্টেশনের দিকে এগোলাম।

স্টেশন মাস্টারের ঘরে গিয়ে জিজ্ঞাসা করলাম, রিটায়ারিং রুমে ঘর খালি আছে?

মাস্টারমশাই বললেন, আছে। কোথায় যাবেন?

কলকাতা।

টিকিট কেটেছেন?

আপনি যদি সিট দেন তাহলে কাটতে পারি।

টিকিট কেটে নিয়ে আসুন। কোন ট্রেনে যাবেন?

আপার ইন্ডিয়া।

তার মানে কাল সকালে।

আজ্ঞে হ্যাঁ।

বেশ টিকিট কেটে আনুন। ক'জন আছেন?

আমি একলা।

শিয়ালদার একটা টিকিট কেটে ভদ্রলোকের কাছে আবার এলাম। উনি টিকিটের নম্বর একটি আলাদা রসিদে লিখে বললেন, সাতটা টাকা দিন।

টাকা দিতে উনি রসিদটা হাতে দিয়ে বললেন, ওপরে উঠে

Scanned with CamScanner

(ঘ) এই যে সরোজদা চাবিটা—

অনেকগুলো চাবিগাঁথা বড় একটা চাবির থোলো এগিয়ে ধরল ধ্রুব সরোজের দিকে।

গলির মুখেই সামনে ট্যাক্সীতে মালমোট ওঠানো হয়ে গেছে। বাড়ির আর সকলেও গাড়ির মধ্যে আসন সংগ্রহ করে বসেছে, ধ্রুব ছুটে চলে এসেছে চাবিটা দিতে।

জানা ব্যাপার নতুন করে বলবার কিছু নেই।

সরোজ স্নেহের গলায় বললেন, বেরোচ্ছিস ? সাবধানে যা। ভালয় ভালয় ঘুরে আয়। গাড়ির তো এখন অনেক দেরি মনে হচ্ছে। এক্ষুণি--

ধ্রুব বলল, আর বলবেন না ! মার কাণ্ড তো জানেনই। পাঁচ ঘন্টা আগে থেকে তাড়া লাগাতে থাকেন। বাড়ি থেকে হাওড়া স্টেশন পর্যন্ত যেতে কী কী বিঘ্ন ঘটে দেরি হতে পারে তার লিস্ট বেড়েই চলেছে।

কাকীমার বরাবর একরকমই গেল।

হাসলেন সরোজ।

বললেন, আচ্ছা !

ধ্রুব একটু হেঁট হয়ে প্রণামের মতো করল।

সরোজ বললেন, আরে বাবা এ সবের পালা তো হয়ে গেছে তখন। কাকীমার হাতের গঙ্গা খেয়ে এলাম। আচ্ছা এগিয়ে পড়। ভাবনা করিস না, যেমন যা করবার করব। আচ্ছা। আচ্ছা !

এই শেষ দুবার 'আচ্ছা'টি শোনালো প্রায় 'দুর্গা' 'দুর্গা'-র মতোই। স্নেহ ব্যাকুলতার স্নেহস্পর্শ।

গাড়ির জানলায় ধ্রুবর ছোটমেয়ের মুখটা দেখা গেল। বললো, সরোজদা টা টা !

সরোজ নিজ মনে হাসলেন, এই এক মেয়ে কিছুতে আর জেঠু বলানো গেল না। বাবা যা বলে, ও তাই বলবে।

তা কারুর ব্যাপারেই যায় না। বাবা যাকে যে সম্বোধনে কথা বলে সৌও তাই বলে। তাই ঠাকুমাকে বলে 'মা' পিসিদের 'বড়দি ছোড়দি'। নিজের মাকে আগে নাম ধরে ডাকতো 'শর্মিলা শর্মিলা'। মায়ের অনেক বকাবকিতে এখন বলে 'ভালো মা' !

সরোজ আরো একটু দাঁড়িয়ে রইলেন। তারপর নিজের বাড়ির মুখোমুখি তালাবন্ধ হয়ে যাওয়া বাড়িটার দিকে তাকালেন। ভাল চেহারার দোতলা বাড়ি সম্প্রতি আবার নতুন রং

Scanned with CamScanner

(৫৫)

তাই তো গোপাল আর গোপাল থাকল না। সে হিন্দু সমাজের বিস্তীর্ণ সমুদ্রের জলে নুনের পুতুলের মতই গলে গেল। ছোলেমানও মিলিয়ে গেল মুসলমান সমাজের মধ্যে।

মেজোকর্তা জানেন, বিতর্কে বিশ্বাসের ভিত নড়ানো যেমন যায় না, তেমনি নুনের পুতুলকে যুক্তি দিয়ে বোঝানোও যায় না।

কিন্তু এখন কী কর্তব্য তাঁর?

বুদো ভুঁয়ে মিথ্যে বলেনি। এ গ্রামে তিনি অতিথি। আগে তাঁর এ কথা মনে হয়নি, এখন বুদো ভুঁয়ের চাঁছাছোলা কথা শুনে মনে হচ্ছে, সত্যিই তিনি এ গ্রামের কেউ না। কেউ না? এ তাঁর গ্রাম নয়? তবে তিনি কোন গ্রামের লোক? মেজোকর্তা সে-কথা জানেন না। তবে এটা বুঝেছেন, এ গ্রামের কেউ নন তিনি। কিন্তু কেন, কেন তিনি কেউ নন? এখানে কি তিনি জন্মাননি, এই বাড়ি কি তাঁর নয়? হ্যাঁ, তাঁরই। তবে?

গ্রাম কি শুধু একটা নিরেট বাড়ি আর একটুখানি জন্মাবার জায়গা? গ্রামের লোক, গ্রামের সমাজ, এদের নিয়েই গ্রাম। এরাই হল গ্রাম। এদের সঙ্গে যোগ কোথায় তাঁর? এখানকার সুখ দুঃখে কি বুদোর মত উদ্বেলিত হন তিনি? না। এখানকার ভাবনা-চিন্তার শরিক কি তিনি? না। এদের সিদ্ধান্তে কি সায় দিতে পারেন তিনি? না না। তবে, এদের সঙ্গে তাঁর যোগ কোথায়? এই মাটিতে তাঁর শিকড় কোথায়?

মেজোকর্তার মনে হল, সত্যিই তাঁর এখানে কোন শিকড় নেই। নেই বলেই এখানকার ঘটনাপ্রবাহে ভাসমান ভেলায় তাঁর ভূমিকা অসহায় এক যাত্রীর। ভাল মন্দ যা-ই কিছু ঘটুক না কেন, কোন কিছুই মোড় ফেরাবার সাধ্য তাঁর নেই। বুদো ভুঁয়ের এই মাটিতে শিকড় আছে, শক্ত শিকড়। যতই মারাত্মক হোক, একটা ঘটনার সৃষ্টি সে করতে পারে। মেন্দা ছাহেবও পারেন। কারণ ওরা সব নুনের পুতুল। নিজের নিজের সমাজের সমুদ্রে ঝাঁপ দিয়ে ওরা সহজেই গলে যেতে পারে।

তিনি তা পারেন না। তাঁর শিক্ষা দীক্ষা, তাঁর বিচার বিবেচনা, তাঁর বিবেক তাঁকে নিটোল একটি ব্যক্তিত্ব দিয়েছে। সেটি গোষ্ঠীর সমুদ্রে গলে না। গলে না বলেই তো সমাজের সঙ্গে মিলে মিশে পিন্ডাকার হতে তিনি পারেন না। আর গোষ্ঠীর সমুদ্র তাঁকে হজম করতে পারে না বলেই তো ঢেউয়ের গুঁতোয় তাঁকে কিনারে ফেলে দেয়। সেই কারণেই তিনি এখানে অপাংক্তেয়। এদের লোক নন। সিন্ধবাদ নাবিকের গল্পের সেই মায়াবী বৃদ্ধের মত ব্যক্তিত্বের এই বোঝাটি মেজোকর্তার কাঁধে চেপে আছে। এটি কলকাতার দান। এককালে এই বোঝাটি ছিল তাঁর গর্বের বস্তু। আজ যখন তাঁর বয়স বেড়েছে, শক্তি কমেছে, নিঃসঙ্গ হয়ে পড়েছেন, তখন কী দুর্বহই না হয়ে উঠেছে এই বোঝা!

মেজোকর্তাকে কে নিঃসঙ্গ করেছে? এই ঘাড়ের বোঝাটি। কে তাঁকে তাঁর গ্রাম থেকে, তাঁর সমাজ থেকে, তাঁর আপন জনেদের কাছ থেকে সরিয়ে নিয়ে গিয়েছে? এই এই, এই দৈত্যটি। যাকে তোমরা বিবেক বল, ব্যক্তিত্ব বল, মনুষ্যত্ব বল, সেই দুরারোগ্য ব্যাধিটি।

এখন এই বৃদ্ধবয়সে কোথায় যাবেন তিনি? কোথায় গিয়ে শান্তিতে একটু আশ্রয় নিতে পারবেন? এমন কি কোথাও জায়গা আছে, যেখানে তিনি তাঁর আপন সমাজ পাবেন? এমন কোন রাজ্য আছে কি, বিবেক যার রাজা? যাত্রাদলের বিবেক নয়, যুক্তি আর বিচারের যে সন্তান, সেই বিবেক।

কেন, কলকাতা? কলকাতা! কলকাতাতেও ত সেই নুনের পুতুলদেরই রাজত্ব। মুসে কোন তফাত নেই। গ্রামের লোকের বিদ্যে কম, তারা নিজেদের চেহারা ঢাকতে পারে না, কলকাতা ছদ্মবেশ ধরার কায়দাটা বেশ রপ্ত করেছে। প্রায় তিরিশ বছর আগেই তিনি কলকাতার ছল ধরে ফেলেছিলেন। সে কী যন্ত্রণাদায়ক অভিজ্ঞতা! মেজোকর্তার কাছে একদিন সভ্যতা আর কলকাতার অর্থ একই ছিল। যে-আলোকে তিনি একদিন নতুন-জীবনের-পথ-দেখানো আলো বলে মনে করেছিলেন, সেটা যে রঙমশাল ছাড়া আর কিছু নয়, এটা যেদিন আবিষ্কার করলেন, সেই দিনই তিনি কলকাতা ছেড়েছেন। কী নিদারুণ ব্যথাই না সেদিন তাঁর বুকে বেজেছিল! এখন আর সে ব্যথা নেই। আছে আতঙ্ক। অচেনা ঘরে একা একা রাত কাটাতে শিশুর যে আতঙ্ক হয়, সেই আতঙ্ক। কোথায় যাবেন তি—?

কখন তাঁর ঘরে সন্ধ্যা ঢুকে পড়েছে মেজোকর্তা তা টের পাননি। এই আরেক জ্বালা। দিনে প্রচুর আলো থাকে। পৃথিবী তখন কত বড় হয়ে যায়। কত প্রসারিত। আর সন্ধ্যা তাকে গুটোতে গুটোতে কত সংকীর্ণ এক ঘরে পুরে ফেলে। তাঁর এই ছোট্ট ঘরখানির মাপে বাঁধা

Scanned with CamScanner

মল্লিকার্জুনকে যথার্থ সম্মানসহকারে পেশ করার কৃতিত্ব ক্যালকাটা মিউজিক সার্কলের। ৬৫ সাল থেকে ইনি একাধিকবার এ-শহরে বড় আসরে গেয়েছেন এবং ঘরের নানাবিধ প্রচলিত ও অপ্রচলিত রাগ শুনিয়ে শ্রোতাদের চিত্ত জয় করেছেন। এঁর প্রথম আবির্ভাবে, মনে আছে, ইনি নন্দ্ বা আনন্দী, বসন্তকেদার ও নায়কী কানাড়া গেয়েছিলেন। প্রথমোক্ত রাগ আগ্রা ঘরানার সৃষ্টি ও বহুকাল পর্যন্ত 'ঢুনঢু বারে সাঁই' 'দরস পিয়া' (মেহবুব খাঁর রচিত) বিলম্বিত খেয়াল ভিন্ন আর কোনও গান কারও মুখে শুনিনি। ওস্তাদ ফৈয়াজ খাঁও এটিকেই বিলম্বিত ও পরে দ্রুত লয়ে গাইতেন। বিলায়েৎ হুসেন খাঁ পরে 'আজ হুঁ ন আয়ে' ভাইসাহেবের জন্য বানিয়ে সে অভাব পূরণ করেন। আল্লাদিয়া খাঁ ও তাঁর শিষ্য-শিষ্যারা এই রাগকে এক বিশিষ্ট সংজ্ঞা দেন যা আবার উত্তরকালে আমীর খাঁর হাতে পড়ে আর একটি নতুন ডাইমেনশন লাভ করে। মনসুর ও কেসরবাই দুজনেই নন্দ্ ভয়ানক ভাল গাইতেন। বসন্তকেদার, মনে আছে, মনসুরের হাতে দুটি পৃথক রাগের যোগফলমাত্র ছিল না; দুটিই মিলেমিশে একটি স্বতন্ত্র রূপ অর্জন করেছিল এবং মধ্যম থেকে উঠে কখনও বসন্ত, কখনও কেদারের তান হয়ে আবার মধ্যমেই মিশে যাচ্ছিল। আকারের উচ্চারণ এমনই ছিল, জ্ঞানপ্রকাশ ঘোষ মশাই শুনে বলেছিলেন, 'এ তো মামুলি আকার নয়। একে আকার বললে যথেষ্ট বলা হয় না, হাঁকার বলতে হয়।' তা সে আকার একেবারে স্বরের কেন্দ্রস্থলে লাগছিল, যাকে বলে মিডল অফ দি ব্যাট। সঠিক বোঝান সম্ভব নয়— এঁর গানে এ-ছাড়া কোথায় যেন কর্ণাটকী সঙ্গীতের 'ইডিয়ম' মাঝে মাঝে ঢুকে পড়ে, তাতে অদ্ভুত এক মজা পাওয়া যায়। কিন্তু যা বিশেষভাবে আমাদের মনে ছাপ রেখে গিয়েছিল তা ওঁর নায়কী কানাড়ার তান। প্রায় পাঁচ-সাত মিনিট ধরে ক্রমান্বয়ে উনি সাংঘাতিক ভারী হলক ও গমক তান করেছিলেন, যা তার পরে আর কখনও ওঁর কাছে শুনিনি। মনে করিয়ে দিলে হেসে বলতেন 'বহ্ বুঢ়াপে কী চিজ্ নহী'।

মল্লিকার্জুন মনসুরের জন্ম ধারওয়ারের কাছে মনসুর গ্রামে ১৯১০ সালে। মৃত্যু ১৯৯২-এর সেপ্টেম্বরে। এই বিরাশি বছরের অন্তত সাতাত্তরটি বছর এঁর সঙ্গীতের মধ্যেই কেটেছে। গান ছাড়া এঁর জীবনে আর কিছুই ছিল না। সংসার, অর্থোপার্জন, ছেলেকে মানুষ করা, মেয়েদের বিবাহ দেওয়া—এ-সবই গৌণ ও গতানুগতিক ভাবে হয়ে গিয়েছে। গানই তাঁর সব ছিল এবং শেষ মাসখানেক ক্যানসার রোগাক্রান্ত অবস্থায় ইনি বাধ্য হয়ে গান বন্ধ করেছিলেন। নচেৎ কখনও চব্বিশ ঘণ্টা মল্লিকার্জুন গান না করে থেকেছেন, এ-রকম ঘটনা বাড়ির আত্মীয়-পরিজনও মনে করতে পারেন না। বাবা দরিদ্র চাষা, কিন্তু নিরক্ষর ছিলেন না, উপরন্তু মারাঠী নাটক ও নাট্যসঙ্গীতের ভক্ত ছিলেন। ধারওয়ারে কর্ণাটকী সঙ্গীত ও মারাঠী গানবাজনা দুই-ই চলত আর প্রচলিত ভাষাও মারাঠী এবং কান্নাড়িগ। মল্লিকার্জুনের সঙ্গীতের সঙ্গে প্রথম ঘনিষ্ঠ পরিচয় পাঁচ-ছ বছর বয়সে, স্বামীজী আপ্পাস্বামীর কল্যাণে; ইনি বেহালায় কর্ণাটকী সঙ্গীত বাজাতেন। মনসুরের দাদারও গানের শখ ছিল এবং অল্প বয়সে বাড়ি থেকে পালিয়ে নাটক কোম্পানিতে নাম লেখান। কিছুদিন পরে মল্লিকার্জুনও দাদার পদানুসরণ করে, সেই কোম্পানিতেই ঢোকেন। এঁরা দুই ভাই ধ্রুব, প্রহ্লাদ, নচিকেতা ইত্যাদির পার্ট করতেন এবং কচি গলায় যাত্রার গান গাইতেন। ম্যানেজার পাণ্ডোবা বুয়া ভাল গান করতেন এবং এই দুই ভাইকেই নাট্যসঙ্গীতের তালিম দিতেন। মারাঠী-নাট্যসঙ্গীত শাস্ত্রীয় সঙ্গীতের অন্তর্গত এবং নাট্যসঙ্গীতে পারদর্শিতা অর্জন করতে হলে দস্তুরমত ওস্তাদি গানের তালিম নিতে হত। পাণ্ডোবা বুয়াকেও ভালভাবে তালিম নিতে হয়েছিল—গোয়ালিয়র ঘরানার বালকৃষ্ণ বুয়া ইছল করঞ্জিকরের শিষ্য নীলকণ্ঠ বুয়ার কাছে। এই নাটক কোম্পানি বছর দুয়েক পরে বাগলকোটে এসে তাঁবু ফেলে। এখানেই নীলকণ্ঠ বুয়া দশ বছর বয়স্ক বালক মল্লিকার্জুনের গান শোনেন এবং স্থির করেন, এ-ছেলেটিকে মিরজে নিয়ে গিয়ে মানুষ করবেন। [redacted]

সমগোত্রের কি না, তা নিয়ে সংশয় তৈরি হওয়ায়, প্রবাল দেওয়াল লেখার ইচ্ছেটা বাতিল করল।

হাজতে অফুরন্ত সময়। প্রবাল একটা ভাঙা দেশলাই কাঠি দিয়ে খুব ধীরে ধীরে নিজের বাঁ হাতে আঁচড় কাটছে। শ্যামলা-শুকনো-খড়িওঠা হাতের চামড়ায় প্রবাল লি ্বল 'বুবলি'।

'বুবলির আজ ম্যাথ্স রীক্ষা, মেয়েটা স্কুলে যেতে পেরেছে কি না, ঈশ্বর জানেন!' বুবলির কথা ভাবতে ভাবতে বুকে কাঁপুনি টের পাচ্ছে প্রবাল। চোখের পাতার নিচে মনে হয় যেন একটু জল জমছে। প্রবালের খুব ইচ্ছে হল হাতের 'বুবলি' লেখাটার ওপর দু'-এক ফোঁটা চোখের জল পড়ুক। সে বাঁ হাতটাকে ধরে থাকল চোখের নিচে, এই খেলাটা খেলতে গিয়ে বুবলির কাছ থেকে সরে মনঃসংযোগ চলে গেল চোখের জলের ওপর। তার ফলে চোখের জল আর পড়ল না। সে লুকিয়ে থাকল বুকের গভীরে।

চোরটা আবার জল চাইছে। গলা দিয়ে ভাল করে আওয়াজ বেরোচ্ছে না। বুড়ো পুলিশটা চোরটাকে জল দিতে মানা করেছে। প্রবাল ভেবেছিল জল না দেওয়াটাও নির্যাতনের একটা পদ্ধতি। পুলিশটা পরে বলেছিল, 'ধোলাই-পেটাই হওয়ার পর জল খেতে দিলে পেশেন্ট মরে যেতে পারে।'

এটা প্রবালের জানা ছিল না। একটা জাঙ্গিয়া-পরা চোরটা পাথ্রের মতো শুয়ে আছে। চার হাত-পায়ে আঠারো জায়গায় উঁচু গাঁট। একটা বাচ্চা ছেলেও বলে দেবে ওই জায়গাগুলো ভাঙা।

মাঝরাতে দু'জন পুলিশ লুঙ্গি-গেঞ্জি পরা রোগা-প্যাংলা একটা লোককে ধরে এনেছিল, এক ব্যাগ সজনের ডাঁটা সমেত। সজনের ডাঁটাগুলো নিয়ে থানায় একটা হইচই ব্যাপার। ওগুলো আসলে ইলেকট্রিকের তার। কোত্থেকে যেন ঝেড়েছে। এমন নিখুঁত মাপে কেটেছে যে, দেখলে একদম সজনের ডাঁটা মনে হবে। সে যা-ই হোক, মাঝরাতে চোরটার হাত-পা ভাঙার দৃশ্যটা দেখা প্রবালের জন্যে খুব সুখের ছিল না।

আহত চোরটা জলের জন্য কাতর আবেদন করে চলেছে। ছেলেটার কষ্ট সহ্য করা যাচ্ছে না। প্রবালের মন গরিব চোরটার জন্য অস্থির হয়ে উঠেছে। স্নায়ুর চাপ কাটানোর জন্য প্রবাল চোখ বন্ধ করে স্মৃতি হাতড়ে বেড়াচ্ছে। বউ-মেয়ের সঙ্গে কাট ্নো সুন্দর সময়গুলো তন্নতন্ন করে খুঁজছে। হ ্াৎ, কালকের একটা দৃশ্য মনে পড়ে গেল প্রবা্লের— জবা বুবলিকে টানতে-টানতে সিঁড়ি দিয়ে নামছে। অর্ধেকটা গিয়ে বুবলিকে রেখে মোবাইল নিতে ফিরে এল, সিঁড়িতে দাঁড়িয়ে বুবলি একা একা কাঁদছে, প্রবাল দরজা থেকে দৃশ্যটা দেখেও আটটা সিঁড়ি ভেঙে বুবলির কাছে পৌঁছতে পারেনি, ভাবতে ভাবতে প্রবালের বন্ধ চোখের পাতা ভেদ করে কয়েক ফোঁটা জল ঝরে পড়ল হাজতের মেঝেতে।

সদ্যস্নাত, গামছাপরা, পেল্লায় ভুঁড়িওলা এক ভদ্রলোক— সম্ভবত বড়বাবু— পিলে চমকানো শব্দে গায়ত্রীমন্ত্র পাঠ করতে করতে লকআপ লাগোয়া ঘরটায় ঢুকলেন।।

(৫৮)

Scanned with CamScanner

2. निम्नलिखित का बा ंग्ला में अनुवाद कीजिए।

गंगा सफ़ाई करवाने में जुट गई है, बन्द कमरों को खुलवाकर जाले, मकड़े दूर करवाए हैं, खिड़कियाँ खोलकर धूप और हवा आने दी है। हर कमरे में कुछ–न–कुछ सामान है, यशवन्त के कॉलेज के दिनों की किताबें, बैट बल्ले, टेनिस के जूते और रैकेट, एक कमरे में प्रवीण बहन के पुराने बक्से हैं, उनके कहने पर वह एक–एक कर के खोलती है–कपड़े जो पुराने फैशन के हो चुके हैं, साड़ियाँ जो शायद रक्खे–रक्खे गलने ल गी हैं, शॉलें, स्वेटर दूसरे बक्सों में घर का सामान है, बर्तन, क्रॉकरी, नए बिना खुले प्लास्टिक के डब्बे, हर साइज़ के–''बस कर–बाक़ी सन्दूकों ं भी ऐसा ही फ़ालतू का सामान होगा।''

''इन्हें रखकर क्या होगा?'' गंगा के मुँह से बिना सोचे–समझे निकल गया।

''मेरे मरने के बाद जो भी हो–मुझे क्या फ़र्क़ पड़ेगा। बस–अभी यों का यों ही रहने दे। बहुत चाव से ख़रीदी थीं चीज़ें–बाद में फेंक देना–'' प्रवीण बहन की दृष्टि उसके चेहरे पर टिकी थी। ''मैं क्यों कुछ फेंकूँगी–मेरा क्या–''

''क्यों? तुझे ही तो सब कुछ सौंपकर जा रही हूँ–''

''मुझे क्यों? वैसे आप कहीं नहीं जा रही हैं–''

उसने बक्से एक–एक करके बन्द कर दिए और चाभियाँ उन्हें देने लगी।

''अब तू ही रख, मैं तुझे ही मालकिन बना रही हूँ।''

''मैं क्यों? मैं तो थोड़े दिन बाद चली ही जाऊँगी। यशवन्त की ताइफ़ सब सम्हालेगी,''

''उसका अपना घर, अपनी गृहस्थी है। उसे इन पुराने लोगों या चीज़ों से कोई मतलब नहीं है–''

उसने बात आगे नहीं बढ़ाई, यह गंध जो उसे प्रवीण कौर के इर्द–गिर्द बसी लगती है क्या मौत के आगमन की सूचना है? यह सब वहम समझ कर उसने मन से निकाल फेंकने की कोशिश की। वह तो ठीक हो रही हैं, प्रवीण कौर ने दो एक बार बात उठाई, उसके वहीं रहने की, घर द्वार और प्रवीण जी

Scanned with CamScanner

की देखभाल करने की।

''अगर आस-पास नौकरी मिली तो ज़रूर उनका ख़्याल करूँगी, आप फ़िक्र न करें-''

उनका मन रखने को गंगा ने तसल्ली दी, उसे मालूम नहीं था कि प्रवीण बहन उसे इतनी गम्भीरता से लेंगी, अगले हफ्ते ही उन्होंने कहा, ''सुन बहन। वह नर्स कह रही थीं कि उसके दफ्तर में जगह ख़ाली होने वाली है, जो लड़की इश्योरेन्स वग़ैरा का काम करती है, शादी करके जा रही है। दफ्तर का काम है, भाग-दौड़ भी नहीं। तू अपनी अर्ज़ी थमा दे न?''

''एक तो मुझे अनुभव नहीं है-दूसरे अगर नौकरी मिल भी गई तो आना-जाना कैसे होगा?''

''मैंने सब सोच लिया है, कोई फ्लैट शैट लेने की ज़रूरत नहीं है। इतना बड़ा घर है तो किराया क्यों दें? फिर ऐसी हालत में मैं अकेली नहीं रहने दूँगी। गाड़ी चलाना तो तुझे आता ही है, मेरी गाड़ी खड़ी हुई है, उसी को चला।''

''आपकी इतनी महँगी गाड़ी-अगर कहीं टक्कर वग़ैरह मार दी तो?''

प्रवीण कौर धीरे-धीरे हँसने लगीं, ''तब नौकरी करने की ज़रूरत क्या है? तू ही कहती रहती है कि कुछ करना है, करना है। तो चल, कुछ महीने काम करके अपना शौक़ भी पूरा कर ले-''

उसने अर्ज़ी भी दी, इंटरव्यू के लिए भी गई, पर कुछ हुआ नहीं। बस, दिन यों ही निकलते गए, धीरे-धीरे उसने सारा काम अपने हाथ में ले लिया, फलों का रस निकालना, मूँग की दाल का सूप बनाना, उन दोनों की चाय, नाश्ता, लन्च, खाना-कभी-कभी प्रवीण बहन कहतीं, ''अरे, तुम इतना मत करो। कोलीन से करवाया करो। बैठे-बैठे फ़ोन पर बातें करती रहती है। चली जाओगी तो हम क्या करेंगे। हमारी आदतें इतनी मत खराब करो-''

''आप फ़िक्र न करें-'' प्रवीण जी ने कहा, ''इन्हें कहीं नहीं जाने देंगे-''

प्रवीण बहन ने पति को देखा, ''बस, आपने तो मन की बात कह दी-''

वह किचन में शाम की चाय की तैयारी कर रही थी, चाय की ट्रे लेकर बाहर जाने के लिए निकली तो ठिठक गई। प्रवीण जी के गुनगुनाने की आवाज़

Scanned with CamScanner

Prj-

कानों में पड़ी। वह हाथ में हथौड़ी लेकर दीवार में कुछ ठोंक रहे थे–गंगा ने धुन पहचानी–'गंगा आए कहाँ से–गंगा जाए कहाँ से ऽऽ' वह अचानक धीमी-धीमी आवाज़ में गाने लगे। गंगा लजा गई और वैसे ही ट्रे पकड़े-पकड़े रसोई में वापस चली गई।

कुछ ही क्षणों में प्रवीण जी ने आकर पूछा, "चाय अभी बनी नहीं क्या?" उनका चेहरा सहज था-शायद उन्हें खुद भी मान न था कि वह क्या गुनगुना रहे थे। सुप्रिया भी हर वक्त कुछ-न-कुछ गुनगुनाया करती थी, रसोई में, कपड़े सुखाते हुए-आते-जाते।

मैं चाहूँ तो भी नहीं गा सकती–सभी कुछ भूल चुकी हूँ–वह दुबारा रसोई से निकली।

कैसे मन को पकड़ कर बैठ गई है यह धुन, कितनी पुरानी फिल्म का संगीत है। उसे बस यही एक पंक्ति–बार–बार याद आती है–गंगा आए कहाँ से–पर वह गुनगुनाती नहीं।

उसने बाहर गाड़ी आने, दरवाज़ा खुलने और फिर पारस्परिक अभिवादन की बात सुनी। वह कमरे में आई–दो स्त्रियाँ थीं, पुत्र-वधू और उसकी माँ–

"यह जैसिका और वेरोनिका–" प्रवीण बहन ने परिचय कराया "और यह गंगा, मेरी सहेली, इंडिया से आई हुई है–"

"आप लोगों के लिए कुछ चाय-नाश्ता?"

गंगा ने प्रवीण बहन से पूछा।

"नहीं, नहीं–" माँ ने कहा, उनका असली नाम तो वीराँ था, जिसका पश्चिमीकरण करके वह वैरोनिका बन गई थीं।

"ले आओ–" प्रवीण बहन ने कहा। उसने आलमारी में से चाय का सेट निकाला, चायदानी में चाय बनाई, ट्रे पर खूबसूरत कढ़ा हुआ नैपकिन बिछाया, कायदे से प्लेटें प्याले रखे, दूध गरम किया चाँदी के जग में दूध और शक्करदानी में शक्कर, चाँदी के चम्मच ट्रे लेकर वह बरांडे में आई जहाँ तीनों बैठी थीं–बिना कुछ कहे मेज़ पर चाय की ट्रे रख दी, आकर पाया कि शक्कर तो भूल ही गई, लौटी और बाहर की आवाज सुनकर अन्दर ही ठिठक गई–

''यह क्या बहन जी-'' वैरोनिका कह रही थी, ''एक पराई औरत को आपने सारा घर, सारी चाभियाँ सौंप दी हैं, कितना महँगा-महँगा सामान है, चाँदी से भरे बक्से के बक्से-''

''मैं उसे अपनी बहन समझती हूँ, पराई नहीं, वह भी अपना मानकर सेवा कर रही है-हालाँकि उसे ख़ुद आराम और देखभाल की जरूरत है-रहे चाँदी से भरे बक्से-वह बात तो पुरानी हो गई। हमारे यहाँ कोई चाँदी वग़ैरह नहीं है-जस्सी की शादी तो यहाँ हुई थी, आपने कुछ दिया होगा तो उसी के पास होगा। उसका सबकुछ तो मायके से नए फ्लैट में चला गया था।''

''हमारे लिए तो वह पराई ही है, न जाने किसका दलिद्दर-''

प्रवीण बहन ने सख़्ती से कहा, ''वीराँ-आप यही बातें करने आई हैं? वह पढ़ी-लिखी, अच्छे ख़ानदान की है-इधर-उधर की बेकार फालतू स्त्री नहीं है, उसके पति बम्बई में पढ़ाते हैं-यहाँ है जिससे बच्चा अमरीकन नागरिक बने।''

गंगा हाथ में शक्करदानी लिये ही वापस घूम पड़ी, लौटकर अपने कमरे में जाकर पलंग पर बैठ गई, क्या करे? प्रवीण बहन को ऐसी हालत में छोड़कर कैसे और कहाँ जाए। दोनों को ही उसकी जरूरत है।

प्रवीण बहन ने रात को सिर्फ़ थोड़ा सा दूध पिया और जल्दी ही सोने चली गईं। गंगा ने प्रवीण जी का साथ देने के लिए थोड़ा-सा कुछ खाया। प्रवीण जी रात को सोने से पहले कुछ पाठ करते थे, बहुत मद्धिम स्वर में-गुनगुनाते हुए से।

आशा के विपरीत उसे भी जल्दी ही नींद आ गई। वैरोनिका की बातों से जैसा सारा दृश्य प्रकाशमान हो गया, वह क्या है? प्रवीन बहन की सेवा शुश्रूषा कर रही है, प्रवीण जी के खाने-पीने, कपड़े-लत्ते का ध्यान रखती है। भारत में पति और बच्चों को छोड़कर आई है, कैसी स्त्री है? न नाता रिश्ता, क्या केवल मैत्री के लिए ही कोई इतना कर सकता है? वह कौन लगती है इन दोनों की-क्या वह सचमुच अवैतनिक दासी बनकर रह गई है? सच बात तो यह है कि उसका कोई और ठिकाना नहीं है। वह अचानक फफक-फफक कर रोने लगी-सास-ससुर के साथ रह सकती थी पर यह गोरा मिश्रित बच्चा लेकर नहीं।

x - x - x - x - x